हिन्दुस्तान

स्वरोजगार >>

फ्लावर मेकिंग फूलों सा खूबसूरत करियर

डेकोरेशन की बढ़ती मांग और असली फूलों की कमी के चलते आर्टिफिशियल यानी मशीनों और हाथ से बने फूलों का चलन काफी तेजी से बढ़ रहा है। ऐसे में फ्लावर मेकिंग को आप आजीविका का बेहतर साधन बना सकते हैं। आज मार्केट में असली फूलों की मांग या तो कुछ खास लोग करते हैं या कुछ खास मौकों पर की जाती है, जबकि आर्टिफिशियल फूलों की मांग हमेशा रहती है। एक सर्वे के मुताबिक, आज मार्केट में फूलों की जितनी डिमांड है, ताजा फूलों से वह केवल आठ प्रतिशत ही पूरी हो पाती है। बाकी की भरपाई या तो आर्टिफिशियल फूलों से की जाती है या फिर गुब्बारों और बिजली की झालर आदि से। ऐसे में आर्टिफिशियल फूलों से मार्केट की जरूरत को पूरा किया जा सकता है।

क्राफ्ट एंड सोशल डेवलपमेंट ऑर्गनाइजेशन की अध्यापिका पूनम कहती हैं कि हाथ से बने फूलों की डिमांड इसलिए और अधिक रहती है, क्योंकि वे अधिक दिनों तक ताजा दिखते हैं। ऐसे में जहां कई दिनों तक या लगातार सजावट की जरूरत होती है, वहां हाथ से बने फूलों की जरूरत होती है। इसके अलावा हाथ से बने फूल झड़ते नहीं हैं, जिससे गंदगी नहीं होती।

फ्लावर मेकिंग करना एक हस्तकला है, जिसमें कोई व्यक्ति हाथों से तरह-तरह के फूल बना कर बाजार में सप्लाई कर सकता है। इसमें मोती, टिशु पेपर, रिबन, ऑरगेंजा यानी कपड़ा और साटन के फूल बनाए जाते हैं। इन फूलों का उपयोग सजावट के अलावा गिफ्ट पैकिंग, एनवलप मेकिंग, बुके और गुलदस्ते बनाने में किया जाता है। आप इस काम को स्वरोजगार के तौर पर शुरू करके करियर को एक नई दिशा दे सकते हैं।

जगह का चुनाव

फ्लावर मेकिंग का काम करने के लिए वैसे अधिक जगह की जरूरत नहीं है। यह काम आप एक छोटे-से कमरे में भी कर सकते हैं, लेकिन अगर आप इस काम को बड़े स्तर पर करना चाहते हैं तो आपको एक हॉल की जरूरत पड़ सकती है। इसके अलावा अगर आप शोरूम बनाएंगे तो आपके काम में इजाफा होगा। हाउसहोल्ड काम होने के कारण आप इसे इंडस्ट्रियल या नॉन इंडस्ट्रियल एरिया में कहीं भी खोल सकते हैं। केवल इतना ध्यान रखें कि आपको कच्चा माल लाने और तैयार माल भेजने में कोई दिक्कत न हो।

जरूरी उपकरण

फ्लावर मेकिंग एक ऐसा काम है, जो कुछ छोटे-छोटे उपकरणों से ही किया जाता है। फ्लावर मेकिंग का काम आपको हाथ से ही करना पड़ेगा, इसलिए इस काम के लिए किसी मशीन की जरूरत नहीं पड़ती। इसमें आपको कैंची, तार, तार कटर, गोंद, ब्रश, धागा, टिशु पेपर, फोम, रबर, गत्ता, प्लास, प्लास्टिक की पत्तियां, टोकरी आदि की जरूरत पड़ेगी।

कहां मिलेंगे उपकरण और कच्चा माल

फ्लावर मेकिंग का सामान यानी उपकरण और कच्चा माल आपको एक ही जगह पर आसानी से मिल सकते हैं। दिल्ली में किनारी बाजार, अजमेरी गेट, सदर बाजार में आसानी से यह सामान मिल जाएगा। अगर आप दिल्ली से बाहर काम करना चाहते हैं तो भी आपको परेशान होने की जरूरत नहीं है, क्योंकि आपके शहर या आसपास के शहर में आपको सारा सामान मिल जाएगा।

लागत

फ्लावर मेकिंग का काम आप 25 से 30 हजार रुपए में शुरू कर सकते हैं। अगर आप बड़े स्तर पर यह काम शुरू करना चाहते हैं तो आपको उसी हिसाब से पैसे खर्च करने पड़ेंगे। वैसे दो लाख रुपए में यह काम काफी बड़े स्तर पर खोला जा सकता है। काम की तरक्की के लिए अगर आप शोरूम खोलना चाहते हैं या फिर फ्लावर मेकिंग के साथ डेकोरेशन का काम भी शुरू करना चाहते हैं तो आपको उसी हिसाब से खर्चा करना पड़ेगा। यानी आप जितने बड़े स्तर पर काम शुरू करेंगे, लागत भी उतनी ही अधिक आएगी।

तैयार माल की बिक्री

आप अपने द्वारा निर्मित फूलों को यूं तो फूलों के बाजारों में बेच सकते हैं, मगर अच्छी बिक्री के लिए आपको कुछ खास सेलिंग पॉइंट्स पर कॉन्टेक्ट करने की जरूरत पड़ेगी। ये सेलिंग पॉइंट होटल, डेकोरेटर, मॉल और रेस्तरां और बड़े-बड़े शोरूम हो सकते हैं।

आमदनी

फ्लावर मेकिंग में आमदनी आपकी कार्यक्षमता और मार्केटिंग, दोनों पर निर्भर करती है। आप इस काम को अगर छोटे स्तर पर शुरू करते हैं तो भी प्रतिमाह 10 से 15 हजार रुपए या इससे अधिक कमा सकते हैं। अगर आपने बड़े स्तर पर काम शुरू किया है और आपकी मार्केट में पकड़ अच्छी है तो आप पच्चीस-तीस हजार रुपए से साठ हजार रुपए प्रतिमाह तक कमा सकते हैं। अगर आप डेकोरेशन का काम भी साथ-साथ करते हैं, तब आपकी इनकम और भी अधिक हो सकती है।

लोन

फ्लावर मेकिंग का काम शुरू करने के लिए आप लोन भी ले सकते हैं। अगर आप प्राइवेट लोन लेना चाहते हैं तो अपने नजदीकी बैंक से संपर्क करें। इसके लिए जिस जगह आप काम स्थापित कर रहे हैं, उस जगह के कागज जिनमें रजिस्ट्री, पावर ऑफ अटॉर्नी या रेंट एग्रीमेंट कोई भी एक कागज चाहिए। इसके अलावा बैंक आपके एजुकेशन के दस्तावेज या फ्लावर मेकिंग का सर्टिफिकेट या दोनों मांग सकता है। साथ ही आपको एड्रेस और आईडी प्रूफ की भी जरूरत पड़ेगी। अगर आपने खादी ग्रामोद्योग द्वारा मान्यताप्राप्त संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त किया है तो आप प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के तहत सर्टिफिकेट पर लोन ले सकते हैं। इसके लिए एससी/एसटी/ महिलाओं/ शारीरिक विकलांग/मायनोरिटीज को ग्रामीण क्षेत्र के लिए 35 प्रतिशत और शहरी क्षेत्र के लिए 25 प्रतिशत की छूट यानी सब्सिडी मिलती है। जबकि अन्य को ग्रामीण क्षेत्र में 25 प्रतिशत व शहरी क्षेत्र में 15 प्रतिशत छूट का प्रावधान है। इसमें अधिकतम लोन की धनराशि पच्चीस लाख है।

मंजू भारद्वाज